आनन्द धारा

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदंपूर्णात् पूर्णमुदुच्यते पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते

विशेषांक

पूज्य ... सिंह 'व्योमेश'

प्रधान सम्पादक/संयोजक: आनन्दधारा मंच

ध्यान गुरु अखिलानन्द साईं बाबा रामकृष्ण परमहंस देवराहा बाबा

||ॐ सद्गुरुदेव परमहंसाय नमः||

परमपूज्य गुरुदेव रोहिनी पति सिंह 'व्योमेश' एवम् वन्दनीया गुरुमाता

बटुक भैरव गान

बटुक भैरव

मातृगर्भ में विवश पड़ा था, नरक सदृश था भोग
ध्यान जप की बात कहाँ, तन का हीं था शोक
अन्धकूप से निकलूँ प्रभु, स्वच्छन्द हो हर श्वास
कुछ ऐसा हो जाय ईश्वर, हो खत्म शीघ्र यह त्रास ।।1।।

नौ महीनों तक क्रमिक रूप से, नवदुर्गा ने दुलराया
शैलपुत्री ब्रह्मचारिणी, और चन्द्रघंटा की माया
रूप लिंग और आकार, लेने लगा वृद्धिष्णु रूप
कुष्मांडा स्कन्दमाता संग, कात्यायनी अनूप ।। 2।।

पोषण मिला मातृगर्भ से, मांसपेशियाँ हुईं पुष्ट
कालरात्रि स्लख विकास से, थीं नहीं संतुष्ट
वर अभय दोनों दिया, दैवी हाथ के संग
महागौरी ने रक्त को, दिया लाल रंग ।।3।।

सिद्धिदात्री ने नौवें माह में, दिया भू पतन आदेश
शिव तत्व के संग प्रकटन, बटुक भैरव का वेश
भ्रातृ रूप में करो ग्रहण, हे पुत्र प्यारे 'व्योमेश'
बटुक भैरव का करो प्रचार, जानें समस्त देश ।।4।।

भैरव तत्व है अत्यन्त गहन, आत्मशोध का है आवेश
रक्त मज्जा और स्नायु तन्त्र से, परिनिष्ठित है परिवेश
मानव कंकाल का आधार है रज्जु, मेरूदण्ड का मेल
विचार भाव और पराभाव का, है सारा भैरव खेल ।।5।।

स्थूल का है अस्तित्व जहाँ, बिलबिलाते अधोविचार
उदर शिश्न और योनि का, करना पड़ता वहन संभार
यह तो कार्य सामान्य प्रकृति का, भैरव सोते पाँव पसार
उर्ध्व गमन की बात करो जब, भैरव तत्व का हो प्रसार।।6।।

सांसारिक जीवन तो सृष्टि स्तम्भ, मत कहो इसे हेय
जीव पाये पोषण यहाँ, भोगों को मिले श्रेय
भैरव तत्व का प्रवेश नहीं, उदर वासना संधि के साथ
भोग तृप्ति से मिलता उच्च भाव, साधक होता सनाथ ।।7।।

साधना करो तो बाल्यकाल भी, बीते बटुक भैरव के संग में
अबूझे जीव फिर भी चालीस पार, रंगोगे इनके ही रंग में
धीरे–धीरे भैरो पवन, फैला जायगी सुवास
बटुक भैरव की लीला से, होगा व्यक्तित्व का विकास।।8।।

सार यही है चाहे साधक, गर जीवन आनन्दपूर्ण
निम्न भाव और अधोप्रवृति का, बना ले ईश प्रार्थना से चूर्ण
फिर ध्यान मणि का भ्रूमध्य में, कर ले शीघ्र स्थापन
बटुक भैरव की सिद्धि से, हो शिव तत्व उद्यापन।।9।।

बटुक भैरव

ध्यान जगत है अति विचित्र, इसका आदि है न अंत
ब्रह्मा ने सृष्टि प्रचालन हेतु, किया स्थापित ध्यान पंथ
ऊर्जा का अक्षय भंडार, है बटुक भैरव के पास
बटुक भैरव की कृपा से ही, त्रिविध ताप का होता नाश ।।10।।

शिव द्वार के आठ प्रहरी, है भैरव समूह चपल अति
बटुक काल गुरु आनन्द, चारों की अद्भूत गति
किसी एक भैरव का शिव प्रेमी हो जाय, तन मन और धन से
विदा हो जाय दुर्भाग्य तत्क्षण, उस साधक के जीवन से ।।11।।

रोहिनी पति सिंह 'व्योमेश'

मैं हूँ भाई बटुक भैरव का, पूजुँ भ्रातृ भाव से बार–बार
मेरे लिए बटुक भैरव ने, लिया नवीन अवतार
आठ साल का छोटा बच्चा, ठिगना गोल मटोल
बाईं ओर झुक–झुक चले, चाल में उसके झोल ।।12।।

घुँघराले बाल हैं चमकीले, मोटी है शिखा
भ्रूमध्य में तृतीय नेत्र, है समस्त सृष्टि चक्र लिखा
गज कर्ण से फैले कान दोनो, जाँघ से नीचे दोनो हाथ
कमर में है मूँज की डोरी, मूसलदण्ड दायें कर के साथ।।13।।

तन पर है पीत वसन, आँखें अधखुली
साम्भवी मुद्रा सतत ग्रहण, उभरी है कण्ठ नली
बायें हाथ में है तंबूरा, संग में छोटा त्रिशूल
दोनों कानों में घूसा हुआ है, रजनीगन्धा का फूल।।14।।

शिव शक्तिभूमि का आश्रय, बटुक भैरव के पास सदा
अधरों पर स्मृत हास्य विराजे, वाह मेरे भैया की क्या अदा
जो देखे हो जाय विमुग्ध, गजब है बटुक भैरव का आकर्षण
आँखें कभी हटना न चाहें, न हो कभी विकर्षण ।।15।।

जरा मृत्यु भय का करे हरन, शिव अमृत का कर पान
वरूण इन्द्रादिक सुर जनों का, बटुक भैरव रखते मान
भाग्य सदा रहे प्रबल, मेरे भैया के वर से
दुर्दिन की है खैर नहीं, हर शाप उखड़े जड़ से ।।16।।

चौंसठ तत्वों की अमूल्य निधि का, बटुक भैरव देते ज्ञान
ओम रहस्य को जानकर, हो जाय साधक सुजान
'सत' 'रज' 'तम' के त्रिफला का, छोटे भैया करते दान
कर्म ज्ञान और भक्ति से, इनका शिष्य बनता महान ।।17।।

बटुक भैरव का गान करूँ, न कुछ कहीं अभिमान
सतयुग से कलियुग यात्रा, बिना कोई विमान
मेरा भईया नाचे ता–ता थईया, दौड़ने में भी मारे बाजी
कोई कहे शैतान उसे, तो कोई कहे पाजी।।18।।

बाल–सुलभ चंचलता से, मेरा भईया है भरा
किसी कोन से जाँचों इसको, हरदम ही खरा
कुछ कहानियाँ परोसूँगा मैं, बटुक भैरव से जुड़ी
सच्ची लगे तो मानो अच्छी, नहीं तो बुरी ही बुरी।।19।।

सतयुग के तृतीय चरण में, शरद ऋतु की एक सुहानी शाम
यवत्माल के दक्षिण में, पर्ण कुटीर में यक्षराज का विश्राम
कुटी थी इस महान ऋषि की, ऋतुनाभ था शुभ नाम
राम राम राम राम, या फिर करते अविराम।।20।।

इन्द्र दूत होकर यक्षराज, थे देने आये संदेश
ऋतुनाभ आरम्भ करे यज्ञ, शुद्ध हो पृथ्वी परिवेश
ऋषिराज थे ध्यानमग्न, नहीं सुन पाये सत काम
यक्षराज नाराज हुये, श्राप देने को हुये तत्पर उद्यम ।।21।।

ऋतुनाभ संरक्षित उस प्रदेश में, था भक्ति का प्रसार
यक्षराज की कुपित वाणी से, प्रकट हुआ व्यभिचार
सतयुग में बुरी दृष्टि से, थे प्रजा जन अनजान
व्यभिचार ने स्त्री रूप ले, शुरू किया ऋषि अपमान ।।22।।

यक्षराज तो चले गए, टूटा अब ऋषि का ध्यान
व्यभिचार के धृष्ट कृतियों का, होता कब तक सम्मान
ऋतुनाभ कुछ नहीं बोले, मंत्रमुग्ध हो इष्ट का किया आह्वान
एक दण्ड में सारे क्षेत्र में, मच गया घमासान ।।23।।

ज्वाला ही ज्वाला धधक उठी, सारे प्रदेश में हाहाकार
छुपी बैठी थी एक गह्वर में, कांपती सिकुड़ी सिमटी व्यभिचार
व्यभिचार की खोज हुई तो, ज्वाला गई सिमट
व्यभिचार को जला बैठी, कुकृतियों का कटा टिकट ।।24।।

इसी क्रम में ऋषि के रोम कूपों से, शक्ति हुई प्रकट
घना कोहरा छाया चहुँ, मौसम हुआ विकट
आठ प्रहर तक दिव्य सुगन्धि छाई, घने कोहरे के संग
आश्रम के परिजन थे ध्यानमग्न, अद्‌भूत था नभ का नीलाभ रंग ।।25।।

अगले दिन जब धुंध हटी, था खेलता आठ साल का एक बच्चा
कानी अँगुली से मिट्टी में कुछ, लिख रहा था वह सच्चा
मैं हूँ बटुक भैरव, मानों मुझे ऋतुनाभ की संतान
शिव प्रहरी हूँ आया यहाँ, बाँटने तुम लोगों को ज्ञान ।।26।।

थे लोग हतप्रभ देखा था नहीं, आश्चर्य यह भला कैसा
कल्प कथाओं में सुना था, यथार्थ न देखा ऐसा
फिर ध्यान हुआ हो न हो, यह ऋषि प्रवर प्रसाद
मनमोहक बटुक भैरव रूप ने, लोगों का किया दूर अवसाद ।।27।।

नन्हीं–नन्हीं ऊँगलियां, नन्हें शिशु बटुक भैरव के पैर
अजानुबाहु दैवी बालक, पारमार्थिक भावों में करता सैर
घुंघराले छोटे बाल शोभते, गाल सेब से अधिक लाल
गोल मटोल चेहरे पर, था कर रहा तृतीय नेत्र कमाल ।।28।।

अभी नहीं तंबूरा था, और न था त्रिशुल
मूसलदण्ड भी साथ नहीं था, बच्चा था प्यारा फूल
मातृगर्भ न जाने बालक, और न नवजात के भाव
तीन वर्ष का बालक भैरव, बात बात में खाये ताव ।।29।।

पाँच दिनों तक रहा बैठा, हर दिन बढ़ी आयु एक बरस
छठे दिन आठ साल हुये पूर्ण, स्वरूप निखरा सरस
प्रतिदन उस बच्चे ने, बनाये शिवलिंग पाँच सहस्त्र
खिलखिलाकर हँसते बटुक भैरव ने, पूरे प्रदेश में बाँटा वस्त्र ।।30।।

हतप्रभ थे लोग निशदिन, देखकर नये नये चमत्कार
खाया पीया कुछ नहीं, फिर भी कांति बरकार
बायें हाथ में आया तम्बूरा, साथ में छोटा त्रिशूल
दायें हाथ में मूसलदंड, कानों में रजनीगन्धा का फूल ।।31।।

सारी बाते प्रभु अनन्त ही, फिर भी हो रही नवीन प्रतीन
बरसा गरमी जाने नहीं, और न जाने शीत
नौवें दिन उस बालक ने, ऋतुनाभ के छुये चरण
हाथ जोड़ बोला हे गुरुवर! हो जाओ शिव के शरण ।।32।।

ऋतुनाभ थे प्रज्ञावान, थे उनके सप्तचक्र जागृत
स्वकुंड में स्वसमिधा, और स्व का ही घृत
बटुक भैरव की शिक्षा का, किया ऋषि ने आदर
'ऊँ नमः शिवाय' पंचाक्षरी का, न होने दूँगा निरादर ।।33।।

शिव तत्व की शिक्षा दूँगा, गाऊँगा बटुक भैरव का गान
अन्य भैरवों और रूद्र वसुओं का, सतत् रखूँगा मान
यह क्षेत्र शिवक्षेत्र कहलाये, हो अति समृद्ध यवत्माल
पंचवर्षीय बटुक भैरव का, यहाँ सदा होता रहे कमाल ।।34।।

यह कथा सत्ययुग के तृतीय चरण की, पाठक करे सहृदय हो ग्रहण
शिव परमेश्वर की ज्योति ज्वाला, प्रत्यक्ष में नहीं होगा सहन
इसीलिए कहता हूँ बन्धु, बटुक भैरव का करो आराधन
सांसारिक उपलब्धि तो मिले सहज, हो पूर्ण स्व का साधन ।।35।।

फिर आऊँगा नवीन अंक में , लेकर एक नई कथा
बटुक भैरव ही एकमेव आश्रय, हरते भव की व्यथा
ध्यान वस्त्र से आपूरित हो, बटुक भैरव को रखो मन में
फिर टहलो सांसारिक राजपथ पर, या करो साधना वन में ।।36।। क्रमशः

✎ रोहिनी पति सिंह 'व्योमेश'

।। ऊँ बटुक भैरवाय नमः।।

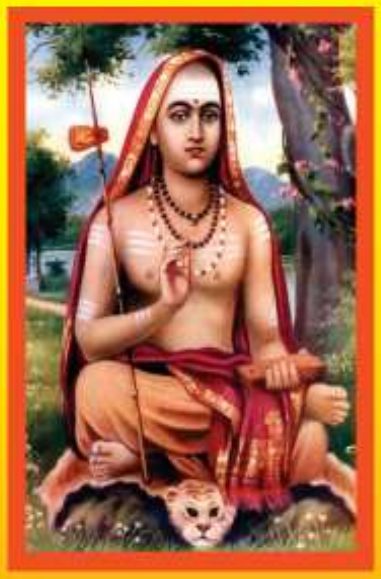

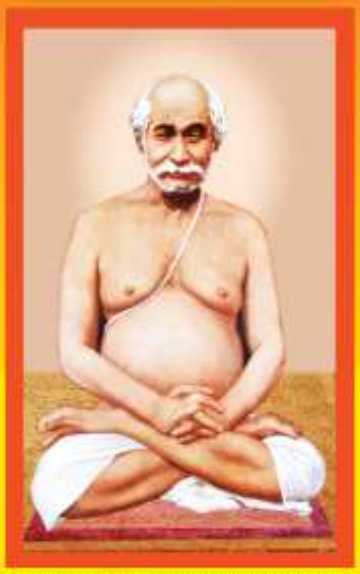

श्रीरामकृष्ण परमहंस ,जगद्गुरुआदि शंकराचार्य , सिद्ध धरणीधर जी (श्रीराजराजेश्वर महादेव संस्कृत महाविद्यालय, वाराणसी) (ऊपर बायें से दायें क्रमशः)
राष्ट्रगुरू दतियापीठाधीश्वर - अनन्त विभूषित श्री स्वामीजी महाराज (मध्य में)
स्वामी विवेकानन्द , श्री श्यामाचरण लाहिड़ी (महाशयजी) , महावतार बाबा (नीचे बायें से दायें क्रमशः)